International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 11 Issue 5 Ser. II || May. 2022 || PP. 68-69

'वर्तमान सन्दर्भों में भूषण की राष्ट्रीय चेतना'

डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय,टोंक (राज॰)

हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीतिकालीन कवि भूषण का नाम जग जाहिर है। उनका विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। भूषण अपनी राष्ट्रीय चेतना के लिए किस तरह विख्यात हैं यह भी सर्व प्रसिद्ध है। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी रहे हैं जो भूषण की राष्ट्रीयता पर सम्प्रदायवाद, संकीर्णता और प्रशस्तिगान का आरोप लगाकर उन्हें राष्ट्रीय चेता कवि की श्रेणी से दूर रखते रहे हैं। उनके अपने–अपने तर्क हैं, परन्तु उन सब का सार यही है कि भूषण ने मध्यकाल में हिन्दू मूस्लिम संस्कृतियों का, राजाओं और नवाबों का जो टकराव चल रहा था उस सन्दर्भ में भूषण ने वेद, पुराण, और भारतीय संस्कृति के साथ हिन्दू राजाओं और हिन्दुत्व का समर्थन किया जो उन्हें राष्ट्रीय कवि सिद्ध न कर सम्प्रदाय विशेष का समर्थक कवि सिद्ध करता है।

परन्तु यदि हम तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक सांस्कृतिक या धार्मिक परिवेश के सन्दर्भ में भूषण के काव्य की उसकी रचनाधर्मिता की सामान्य परख भी करते हैं तो यह आरोप सर्वथा भ्रान्त और मिथ्या सिद्ध होते हैं। बल्कि गहनता से परख करने पर स्पष्ट होता है कि भूषण ने मध्यकाल की जिन विपरीत परिस्थितियों में अपनी राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त किया और भारतीय जनमानस को जगाने का प्रयास किया वह कालजयी है और उस राष्ट्रीय चेतना को आज भी बरकरार रखने की आवश्यकता है।

आज वर्तमान सन्दर्भों में हम देखते हैं कि हमारी राष्ट्रीय अस्मिता दिन–प्रतिदिन बिखराव की और अग्रसर हो रही है। भले ही यह बिखराव उस प्रकार से प्रकट नहीं हो रहा है जिसे हम केवल भौगोलिक विखण्डन या शासकीय विखण्डन के रूप में देख सकें। राजनैतिक स्तर पर क्षैत्रीय नेताओं द्वारा अपनी आँचलिक संस्कृति, जाति और सम्प्रदायों को आधार बनाकर अलग राज्यों की मांग करना, आर्थिक, सामाजिक अथवा सुरक्षा की दृष्टि से अपने–आप को स्वायत्त बनाने की मांग करना और उसके लिए विभिन्न हिंसक आन्दोलन और उत्पात करना, देश की अखण्डता को खण्डित करने का ही प्रयास माना जायेगा।

हमारे उत्तरी पूर्वी राज्यों में सम्प्रदाय के आधार पर जिस प्रकार रोजाना दंगे होते हैं और किस प्रकार देश के वीर जवानों के साथ बर्बरता पूर्वक व्यवहार किया जाता है, आज यह किसी से छिपा नहीं है। ऐसी स्थितियों के कारण उन दंगों में भारत माँ के लाल अनावश्यक रूप से मौत के मुँह में समाकर अकाल काल का ग्रास बन रहे हैं। साम्प्रदायिक तत्वों द्वारा भारतीय संस्कृति और धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर उसे नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। तो क्या ये सारी स्थितियाँ देश की अखण्डता और राष्ट्रीय चेतना में बाधक नहीं है? और यदि बाधक हैं तो निश्चय ही सच्ची राष्ट्रीय भावना से ही इनसे निजात पाई जा सकती है।

यदि भूषण की राष्ट्रीय चेतना के सन्दर्भ में इन सारी स्थितियों का आकलन किया जाये तो स्पष्ट है कि भूषण के समय में भी ऐसी ही कुछ परिस्थितियाँ विद्यमान थीं। बल्कि कहना न होगा कि इससे भी अधिक विषम और भीषण रूप में विद्यमान थीं। उस समय के अन्य मुस्लिम शासकों की बात छोड़ भी दें तो औरंगजेब अकेला ही उन सबका प्रतिनिधि बनकर हमारे सामने प्रकट हो जाता है। अपनी धर्मान्धता और कट्टरपन के साथ वह जिस प्रकार भारतीय जनता पर अथवा यों कहैं कि हिन्दू जनता पर अनाचार और अत्याचार कर रहा था,भारतीय धर्म और मन्दिरों को जिस प्रकार नष्ट करने पर तुला हुआ था, वह आज के सम्प्रदायवाद के मुकाबले कई गुना अधिक था। ऐसी स्थिति में उसके विरोध के लिए भारतीय जनता को जगाने के लिए भूषण जैसे कवि ने यदि भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए जन चेतना जगाने का काम किया और उसके रक्षकों शिवाजी और छत्रसाल की प्रशंसा की तो कोई अनुचित कार्य नहीं किया। डॉ. शिव कुमार शर्मा के शब्दों में ''भूषण की कविता में आये हुए वेद, पुराण, हिन्दु, तिलक, और चोटी जैसे शब्दों को देखकर उन्हें राष्ट्रीय कवि के सम्मान से वंचित नहीं किया जा सकता। ऐसा करना उनके साथ सरासर अन्याय होगा। भूषण के युग

की राष्ट्रीयता के सम्यक् ज्ञान के लिए हमें आधुनिक युग के राष्ट्रीयता के चश्में को उतारकर परे रखना होगा। भूषण के समय व्यक्ति विशेष के द्वारा अधिकृत एक भू–भाग राष्ट्र समझा जाता था और उसके प्रति प्रेम और स्वार्थ त्याग राष्ट्रीयता समझी जाती थी। उस समय राष्ट्रीयता का स्वरूप आज जैसा व्यापक नहीं था, जिसमें हिमालय से लेकर कन्याकुमारी पर्यन्त रहने वालों में हिन्दु–मुसलिम सिक्ख ईसाई सब आपस में भाई–भाई' की भावना आ पाती। भूषण ने उस युग की राष्ट्रीयता के अनुसार अपना कर्त्तव्य पूरा सोलह आने निभाया है, इसमें दो मत नहीं हो सकते।''[1]

दूसरी बात यहाँ ध्यान देने की यह है कि जो लोग भूषण की राष्ट्रीयता पर संप्रदायवादी और कट्टरवादी होने का आरोप लगाते हैं वे यह भूल जाते हैं कि भूषण ने केवल एक सजग कवि और नागरिक होने के नाते राष्ट्रीय अन्याय, अत्याचार और शौषण का विरोध किया है। उनका उद्देश्य धर्मान्धता के आधार पर मुस्लिम धर्म का विरोध करना कभी नहीं रहा है जबकि इसके विपरीत औरंगजेब और उसके कट्टर अनुयायियों का एक मात्र लक्ष्य ही हिन्दू जनता पर अत्याचार और अनाचार करना रहा है। भूषण ने अपने काव्य में मुसलमान जाति या मुस्लिम धर्म की निन्दा कहीं नहीं की है। और यदि किसी हिन्दू शासक या सम्राट ने भी यदि अन्याय, अत्याचार और शोषण का साथ दिया है या उसकी प्रेरक शक्तियों का साथ दिया है तो उसका विरोध भी भूषण ने किया है। यही कारण है कि भूषण यह लिखकर कि ''बाबर, अकबर, हुमायू हद्दि बाँध गये'' उनकी प्रशंसा की है तो जसवन्त सिंह और उदयभनुसिंह की कड़ी निन्दा भी की है। यद्यपि वे हिन्दू नरेश थे।

जहाँ तक उनकी राष्ट्रीयता पर प्रशस्ति गान का आरोप लगाया जाता है उसके विषय में सीधे–सीधे कहा जा सकता है कि शिवाजी और छत्रसाल उनके आदर्श थे। शिवाजी की नीति अत्यन्त उदार थी, शिवाजी भी कट्टरपंथी नहीं थे, उनके दरबार में मुसलमान भी उच्च पदों पर नियुक्त थे। यहाँ तक कि शिवाजी का तो आदेश था कि कोई भी किसी मुसलमान स्त्री, उनके धर्म ग्रन्थ, और मस्जिद आदि को हानि न पहुँचाये। ऐसे महान व्यक्ति को आदर्श मानकर राष्ट्रीय चेतना की अलख जगाने वाले कवि को कैसे संकीर्ण और कट्टरपंथी माना जा सकता है। ''यदि औरंगजेब की निन्दा के कारण भूषण अराष्ट्रीय कवि हैं तो अंग्रेजों की शोषण नीति का विरोध करने वाले आधुनिक युग के गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, तथा दिनकर जैसे राष्ट्रीय कवियों को तथा नेहरू जैसे नेताओ को भी उसी कोटि में रखना पड़ेगा। किन्तु ऐसा करना नितान्त असमीचीन है।''[2] सच तो यह है कि सम्पूर्ण और व्यापक राष्ट्रीय चेतना के आधार पर ही हिन्दू मुसलमान दोनों के सहयोग से शिवाजी को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई थी जो औरंगजेब जैसे धर्मान्ध व्यक्ति को सुहा नहीं रही थी।

विषय की समीक्षा करते हुए और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है परन्तु यहाँ संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भूषण की कविता किसी संकीर्ण भावना सांप्रदायिकता अथवा चाटूकारिता के उद्देश्य पर आधारित होकर नहीं बल्कि राष्ट्रीय उत्थान के लिए लिखी गई है, और इसीलिए वह शाश्वत् और कालजयी है। अंत में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि ''भूषण ने जिन दो नायकों की कृति को अपने वीर काव्य का विषय बनाया है वे अन्याय दमन में तत्पर, हिन्दू धर्म के संरक्षक दो इतिहास प्रसिद्ध वीर थे। उनके प्रति भक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा हिन्दू जनता के हृदय में उस समय भी थी और आगे भी बराबर बनी रही या बढ़ती गई। इसी से भूषण के वीर रस के उद्‌गार सारी जनता के हृदय की सम्पत्ति हुए।''[3]

सन्दर्भ :–

1. डॉ. शिव कुमार शर्मा : हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ

2. डॉ. शिव कुमार शर्मा : हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ

3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास